भारत की विदेश नीति पर कोविड-19 का प्रभाव

कांता वर्मा

सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शास्त्रीय महाविद्यालय, लंजी जिला—बालाघाट (म.प.)

Abstract

दुनिया के लिए महामारी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सबसे निराशकारी घटना रही है। महामारी के साथ-साथ कई भू-राजनीतिक सुरक्षा के कारण पहले से जितने दुनिया अब और भी अधिक जटिल हो गई है। इसके अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में अविस्तर बढ़ दिया है। इसकी दृष्टि सामाजिक बवह है कि आज बदलने वाले हैं मानवीय और राजनीति अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी जीवन में विभाजन, तथा लंबी समय लाने के महत्व के साथ-साथ भू-राजनीति के अधिक परिवर्तनों तथा शक्ति के क्षेत्रों के प्रभावों से जुड़े अभियान को सामने ला दिया है।

भारत इस युद्ध क्षेत्र के प्राचीन दर्शन पर है। आज खुले समाज और लोकतात्रिक व्यवसायों और विषय नंबर पर हमारी जिन्दगीय रूपों का संधार है। महामारी के दौरान भारत ने विशेष अंतर्द्वंद्व से पैरासिटोमाइल व इंडियानी कुलीनवंशी कोरोनावायरस की माओ को दूर करने हेतु अपना दम उत्पादन समय को बढ़ाया। 150 से अधिक देशों को दाब बने, जिनमें आबादी से अधिक रुपया या वेरी-वानिक्षिप्त थी। इसके 4 देशों में हमें अपने परिवर्तनों व दर्शन बनाये।

इससे युद्ध का पंडत जाता है कि भारत में न केवल खुद की गण्डे करने की क्षमता अतिक संघीय मंत्रालयों को बनाने की क्षमता है। राजनीतिक मंत्रालयों जो ने अविरामित भारत को आक्रमण किया, जो दुनिया के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन कोविड-19 की दूसरी लहर के बाद विदेशी महारानी भी स्वीकार करनी पड़ी है। महामारी के भीतर परिवर्तनों के कारण क्षेत्रीय प्रभाव और गेंदबाजी प्रभाव में प्रभावित बढ़े हुए, जिसका नतीजा है कि अगर वाले वर्ष में भारत की विदेश नीति के स्थान पर भी प्रभाव पड़ेगा।

Keywords: पैरासिटोमाइल, महामारी, विदेश क्षेत्र

Article Publication

Published Online: 13-Oct-2021

*Author's Correspondence

kantapraa@hotmail.com

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

विदेश नीति—

विदेश नीति उन सिद्धांतों व निर्देशों का समूह है, जिनमें एक राष्ट्र, अन्य राष्ट्रों के साथ अपने सम्बन्धों के दौरान विशेष राष्ट्रीय लक्ष्यों की पुर्तिंग हेतु प्रभावित हुआ है। भविष्य में अंतरराष्ट्रीय निर्देशों पर कारण अंतरराष्ट्रीय संघर्षों का स्वरूप अविस्तर जितें दिया है और उसके अनुरूप विदेश नीति का निर्धारण भी एक मूल अधिकृत है। किंतु निर्धार गॉन्स के शब्दों में—“अपने किसानकल रूप में विदेश नीति एक सरकार की दूसरी सरकार के प्रति, एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य के प्रति, अथवा एक सरकार द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय संघ के प्रति अपनाई गई विशेष पद्धति है।”

कोविड-19 और भारत की विदेश नीति—

परिचय के देशों के साथ वर्तमान शिक्षा सम्मलेन में प्रधानमंत्री मोदी शामिल हुए। पहले वर्ष के दौरान हमने कम आय वाले समूहों, प्रभावित समूहों की सीमा तक किया, जो छोटे व्यवसायों और अन्य सामाजिक अध्ययन में उन लोगों की मदद करने हेतु जो लोकडाउन से प्रभावित थे, 266 बिलियन डॉलर के प्रोत्साहन एवं समर्थन की घोषणा की, जो हमारे उद्योग का 10 प्रतिशत है। पुंछ ड्राफ्ट फर्म कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें 3000 रुपये वित्तीय सहायता की, जिसके तहत 800 मिलियन लोगों को अतिरिक्त राशन दिया गया, जो आज भी संचालित है।

1. केवल 6 महीने के अंदर हमने पीपीई, टेस्टिंग किट, दवाईयाँ आदि में उत्पादन क्षमता को बढ़ाया एवं दूसरे देशों को भी सहाय कर रहे हैं। आज हम एन-95 मार्क वैश्विक आपूर्ति के लिए बना रहे हैं।
2. भारत ने विश्व में 150 देशों को पैरासिटामोल व हाइड्रोक्सीक्लोरोकवीन आधे से अधिक देशों को मुफ्त में दी।
3. चार पहली देशों में चिकित्सा दल दिये।
4. चीन के साथ अपनी सीमा पर कई देशों के बाद आये संकट से निपटा है।
5. इस्रायल-पैशिफिक क्षेत्र, समावेशी अवस्था, अवसरों के नेटवर्क केंद्र के रूप में उभर रहा है। हमारा दृष्टिकोण सहकारी, समावेशी है, जैसा कि, क्षेत्र में सभी की सुरक्षा एवं सभी के विकास के रूप में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपने सागर विज्ञन में कहा गया है। दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में भी हमने राजनीतिक सुरक्षा संबंध बढ़ाये हैं। ऑस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका के साथ हमारे साझा विज्ञन को साकार करने में प्रगति हुई।

कोविड-19 काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव—

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से भारत विश्व के 190 देशों से 7500 वस्तुओं का निर्यात तथा 140 देशों से लगभग 6000 वस्तुओं का आयात करता है। भारत का व्यापार, संयुक्त राज्य अमेरिका, बांग्लादेश, चीन, सिंथिजरल्क्स, सऊदी अरब देशों के साथ होता है। बैंकिंग सेक्टर में 1.5 ट्रिलियन राजस्व हानि का संकट रहा है।

<table>
<thead>
<tr>
<th>क</th>
<th>क्षेत्र</th>
<th>घाटा (मिलियन डॉलर में)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>रासायनिक क्षेत्र</td>
<td>120 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>कपड़ा और परिवार</td>
<td>64 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>अटॉमोटिव क्षेत्र</td>
<td>34 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>इलेक्ट्रिकल मशीनरी</td>
<td>12 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>चमड़े के उत्पाद</td>
<td>13 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>धातु उत्पाद</td>
<td>13 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>फार्मीचर एवं लकड़ी उत्पाद</td>
<td>15 मिलियन डॉलर</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उपरोक्त तालिका में भारत को अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रतिष्ठा के कारण हुये घाटा को दर्शाया गया है। तालिका में स्पष्ट है की भारत का सबसे अधिक रासायनिक या उससे संबंधित उत्पादों का सबसे अधिक निर्यात व आयात करता है। इसीलिए घाटा सबसे अधिक इस क्षेत्र में दर्शाया गया है, जबकि कम मात्रा में भारत को घाटा इलेक्ट्रिकल्स के क्षेत्र में हुआ है।

कोविड-19 व पहली देशों के प्रति नीति—
1. हमदर्दी की भूमिका।
2. आत्मनिर्भर कृत्तिनीति का सहारा।
3. राष्ट्र में उत्पादन कार्य शुरू।
4. चिकित्सा, स्वास्थ्य से 7 से अधिक देशों को द्वारा उपलब्ध कराया।
5. 7 देशों के लिए आपातकालीन कोष (कोविड-19) के लिए स्थापना।

भारत की विदेश नीति पर कोविड-19 के संबंधित प्रभाव—
1. श्रेष्ठता राजनीति—
कोविड-19 के कारण पहली देशों की भौतिक रूप से सहायता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और राजनीतिक प्रभुत्व को चुनौती मिलेगी।
2. चीन की घुसपैठ—
चीन की "वक्रुक्त कृत्तिनीति" भारत की सबसे बड़ी चुनौती है। कोविड-19 के कारण भौतिक शक्ति, शक्ति संतुलन, राजनीतिक इत्यादित्तर्क भारत के लिए मुराबिल भरा पड़ा है।
3. सैन्य खर्च में कमी के चलते "क्वाल" में भारत की क्षमता प्रभावित होती है।
4. अर्थव्यवस्था से प्रभावित—

भारत आर्थिक संकट के साथ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, औद्योगिक उत्पाद में कमी, बेरोजगारी ने भारत की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है।

5. अमेरिका—वीन संबंध—

हिंद प्रशांत क्षेत्र में वीन के बढ़ते प्रभुत्व और भारत में कोविड-19 से संबंधित परेशानियों व संकट के कारण अमेरिका, वीन के साथ आर्थिक संबंधों को सामान्य बनाने का प्रयास कर सकता है।

चूनूतियां—

1. सीमा सुरक्षा, हवाई यात्रा
2. प्रवासी भारतीयों को वापस नाना।
3. 13 मई 2020 (14800 नागरिकों की वापसी)
4. कोरोना महामारी के उपाय।
5. बेरोजगारी, आर्थिक मंदी
6. नागरिकों की खाता।
7. युवाओं का मनोबल गिरा।
8. अपनी पुरानी छवि को बनाये रखना।
9. बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य से जुड़ना है।
10. कोरोना की दूसरी लहर ने नदी में बहाये लाशों की संख्या से कमजोर विदेशी नीति सामने आई।

सकारात्मक परिणाम—

1. भारत के कार्य उद्योग विकसित कर सके व समस्या का सामना किया।
2. विश्व की दशा और दिशा तय करने में सक्षम हुआ।
3. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोगी की सशक्त भूमिका निभाई है।
4. गरीबों का मनोबल बढाने का प्रयास किया गया।
5. पतलाने करने से रोका।
6. एशिया की उपभोक्ता शक्ति से उभरना।
7. सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य 2021 में बना।

निष्कर्ष—

कोविड-19 महामारी ने भारत की राजनीतिक क्षमता, आर्थिक क्षमता को प्रभावित किया है, जिससे विदेशी नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारतीय क्षमता सीमित हुई है। आने वाले समय में भारत की विदेशी नीति में परिवर्तन की सामान्य है। कोविड-19 ने दक्षिण एशिया के लिए कुछ नए अवसर प्रदान किये हैं। महामारी ने वैश्विक स्तर पर बदलाव को बढ़ा दिया है और इससे भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा तनाव में वृद्धि होगी। लेकिन भारत सभी देशों को दूसरों की संप्रभुता का समाना करते हुए साथ काम करने हेतु प्रेरित करता है और वैश्विक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार है।

वर्तमान समय की घटनाओं ने सिखाया है कि समान विचारशास्त्री वाले देशों के लिए विभिन्न चूनूतियों का सामना करने हेतु समस्या होगा क्षैतिज है। इस महामारी ने हमारे सामने लाया है, क्योंकि हम सब इस अभिनव रीति से निकलने का रास्ता तलाश रहे हैं।

सुझाव—

1. इस वैश्विक महामारी के दौर में “सारक” को पुनः मजबूत करना होगा, इससे देशों के मध्य सहयोग के अवसर बढ़ेंगे।
2. क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय स्तर सेवाओं पर ध्यान देना होगा।
3. दक्षिण एशिया में बन रही भू–राजनीतिक, स्वास्थ्य, पर्यावरण क्षेत्रीय संपर्क जैसे मुद्दों पर विचार करना।

https://www.rrjournals.com/
4. आंतरिक लोकतंत्र व सहभागिता को बढ़ाना।

संदर्भ ग्रंथ—

1. पत्रिका जबलपुर— दिनांक 13/10/2021, पृष्ठ कर्मक— 4
2. द हिंदू दिनांक 05/05/2021, “A covid blot on Indias foreign policy canvas” लेख।
3. डॉ. मीर्जा राजेश— कोरोना महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: वर्ल्ड लेबल पेपरक्सेशन, गाजियाबाद, पृष्ठ कर्मक—172, 174।
4. डॉ. जे.एस. जौहरी— राजनीति विज्ञान एस.पी.बी.डी. पेपरक्सेशन आगरा, पृष्ठ कर्मक—3, 4